लखनऊ, मंगलवार
26 मार्च 2019
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 3.00
पृष्ठ 24+4=28

दैनिक जागरण

अब मात्र ₹ 3.00* में सोमवार से शुक्रवार

www.jagran.com

उत्तरप्रदेश, दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

काल की गणना करेगी लविवि की वेधशाला

पुलक त्रिपाठी • लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के ज्योतिर्विज्ञान विभाग में स्थापित वेधशाला में लगे यंत्र सक्रिय हो गए हैं। इनसे खगोलीय घटनाओं की ही नहीं, ग्रहों की चाल और स्थिति के जरिये काल की गणना हो सकेगी। विभाग के प्रोफेसरों ने लंबे शोध के बाद यह सफलता पाई है।

लखनऊ विश्वविद्यालय में साल 2002 में ज्योतिर्विज्ञान विभाग अस्तित्व में आया था। वर्ष 2004 में यहां वेधशाला की स्थापना हुई। वेधशाला को महामहोपाध्याय पंडित कल्याण दत्त शर्मा का नाम दिया गया। वेधशाला में कई अनूठे यंत्र लगाए गए। इनमें सम्राट, यामोत्तरतुरीय, शंकु, षष्टस्य, पलभा व वलय जैसे यंत्र हैं। शुरुआत में दिन में सूर्य को आधार मानकर फिर आकाशीय तारों के जरिए ग्रहों की स्थिति की सटीक जानकारी हासिल की गई। विभाग के प्रो. विपिन पांडेय ने बताया कि ग्रहों की स्पष्ट स्थिति समझने के लिए वेधशाला स्थापित की गई थी। ग्रहों की चाल व स्थिति से ही काल की सही गणना की जा सकेगी।

उपलब्धि

- लंबे शोध के बाद सक्रिय हुए वेधशाला के यंत्र
- ग्रहों की स्थिति से भविष्य की घटनाओं की मिलेगी जानकारी

प्राचीन भारतीय ज्योतिष के सिद्धांत ग्रंथों को अच्छी तरह अध्ययन-अध्यापन के लिए वेधशाला अब प्रमुख माध्यम होगी। इसके माध्यम से पंचांग की गणित में संशोधन किए जाने और काल की सटीक गणना हासिल करने में हमने सफलता अर्जित की है।

प्रो. ब्रजेश कुमार शुक्ल, पद्मश्री, संयोजक ज्योतिर्विज्ञान विभाग, लविवि

लखनऊ विश्वविद्यालय के ज्योतिर्विज्ञान विभाग में स्थापित वेधशाला